

रविवार 25 मई, 2025

विषय— आत्मा और शरीर

स्वर्ण पाठ: लूका 1 : 46, 47

"मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है। और मेरी आत्मा मेरे उद्धार करने वाले परमेश्वर से आनन्दित हुई।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 66 : 8, 9, 16-20

- 8 हे देश देश के लोगो, हमारे परमेश्वर को धन्य कहो, और उसकी स्तुति में राग उठाओ,
9 जो हम को जीवित रखता है; और हमारे पांव को टलने नहीं देता।
16 हे परमेश्वर के सब डरवैयों आकर सुनो, मैं बताऊंगा कि उसने मेरे लिये क्या क्या किया है।
17 मैं ने उसको पुकारा, और उसी का गुणानुवाद मुझ से हुआ।
18 यदि मैं मन में अनर्थ बात सोचता तो प्रभु मेरी न सुनता।
19 परन्तु परमेश्वर ने तो सुना है; उसने मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान दिया है॥
20 धन्य है परमेश्वर, जिसने न तो मेरी प्रार्थना अनसुनी की, और न मुझ से अपनी करुणा दूर कर दी है!

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यशायाह 55 : 1, 3

- 1 अहो सब प्यासे लोगो, पानी के पास आओ; और जिनके पास रूपया न हो, तुम भी आकर मोल लो और खाओ! दाखमधु और दूध बिन रूपए और बिना दाम ही आकर ले लो।
3 कान लगाओ, और मेरे पास आओ; सुनो, तब तुम जीवित रहोगे; और मैं तुम्हारे साथ सदा की वाचा बान्धूंगा अर्थात् दाऊद पर की अटल करुणा की वाचा।

2. भजन संहिता 33 : 20-22

- 20 हम यहोवा का आसरा देखते आए हैं; वह हमारा सहायक और हमारी ढाल ठहरा है।

- 21 हमारा हृदय उसके कारण आनन्दित होगा, क्योंकि हम ने उसके पवित्र नाम का भरोसा रखा है।
22 हे यहोवा जैसी तुझ पर हमारी आशा है, वैसी ही तेरी करुणा भी हम पर हो॥

3. लूका 4 : 1 (से 1st.), 33-37

- 1 फिर यीशु पवित्रआत्मा से भरा हुआ, यरदन से लैटा; और चालीस दिन तक आत्मा के सिखाने से जंगल में फिरता रहा; और शैतान उस की परीक्षा करता रहा।
33 आराधनालय में एक मनुष्य था, जिस में अशुद्ध आत्मा थी।
34 वह ऊंचे शब्द से चिल्ला उठा, हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं तुझे जानता हूं तू कौन है? तू परमेश्वर का पवित्र जन है।
35 यीशु ने उसे डांटकर कहा, चुप रह: और उस में से निकल जा: तब दुष्टात्मा उसे बीच में पटककर बिना हानि पहुंचाए उस में से निकल गई।
36 इस पर सब को अचम्भा हुआ, और वे आपस में बातें करके कहने लगे, यह कैसा वचन है कि वह अधिकार और सामर्थ के साथ अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता है, और वे निकल जाती
37 सो चारों ओर हर जगह उस की धूम मच गई॥

4. यूहन्ना 5 : 19

- 19 इस पर यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।

5. लूका 12 : 1 (से 3rd.), 13 (एक)-24, 28-31

- 1 इतने में जब हजारों की भीड़ लग गई, यहां तक कि एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे।
13 फिर भीड़ में से एक ने उस से कहा, हे गुरु, मेरे भाई से कह, कि पिता की संपत्ति मुझे बांट दे।
14 उस ने उस से कहा; हे मनुष्य, किस ने मुझे तुम्हारा न्यायी या बांटने वाला नियुक्त किया है?
15 और उस ने उन से कहा, चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखो: क्योंकि किसी का जीवन उस की संपत्ति की बहुतायत से नहीं होता।
16 उस ने उन से एक दृष्टान्त कहा, कि किसी धनवान की भूमि में बड़ी उपज हुई।
17 तब वह अपने मन में विचार करने लगा, कि मैं क्या करूं, क्योंकि मेरे यहां जगह नहीं, जहां अपनी उपज इत्यादि रखूं।
18 और उस ने कहा; मैं यह करूंगा: मैं अपनी बखारियां तोड़ कर उन से बड़ी बनाऊंगा;

- 19 और वहां अपना सब अन्न और संपत्ति रखूंगा: और अपने प्राण से कहूंगा, कि प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों के लिये बहुत संपत्ति रखी है; चैन कर, खा, पी, सुख से रह।
- 20 परन्तु परमेश्वर ने उस से कहा; हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा: तब जो कुछ तू ने इकट्ठा किया है, वह किस का होगा?
- 21 ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिये धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं॥
- 22 फिर उस ने अपने चेलों से कहा; इसलिये मैं तुम से कहता हूं, अपने प्राण की चिन्ता न करो, कि हम क्या खाएंगे; न अपने शरीर की कि क्या पहिनेंगे।
- 23 क्योंकि भोजन से प्राण, और वस्त्र से शरीर बढ़कर है।
- 24 कौवों पर ध्यान दो; वे न बोते हैं, न काटते; न उन के भण्डार और न खत्ता होता है; तौभी परमेश्वर उन्हें पालता है; तुम्हारा मूल्य पक्षियों से कहीं अधिक है।
- 28 इसलिये यदि परमेश्वर मैदान की घास को जो आज है, और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा पहिनाता है; तो हे अल्प विश्वासियों, वह तुम्हें क्यों न पहिनाएगा?
- 29 और तुम इस बात की खोज में न रहो, कि क्या खाएंगे और क्या पीएंगे, और न सन्देह करो।
- 30 क्योंकि संसार की जातियां इन सब वस्तुओं की खोज में रहती हैं: और तुम्हारा पिता जानता है, कि तुम्हें इन वस्तुओं की आवश्यकता है।
- 31 परन्तु उसके राज्य की खोज में रहो, तो ये वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।

6. मत्ती 16 : 24-26

- 24 तब यीशु ने अपने चेलों से कहा; यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।
- 25 क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा।
- 26 यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?

7. मत्ती 10 : 28

- 28 जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उन से मत डरना; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है।

8. यशायाह 58 : 6, 8-11

- 6 जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूं, वह क्या यह नहीं, कि, अन्याय से बनाए हुए दासों, और अन्धेर सहने वालों का जुआ तोड़कर उन को छुड़ा लेना, और, सब जुओं को टूकड़े टूकड़े कर देना?
- 8 तब तेरा प्रकाश पौ फटने की नाई चमकेगा, और तू शीघ्र चंगा हो जाएगा; तेरा धर्म तेरे आगे आगे चलेगा, यहोवा का तेज तेरे पीछे रक्षा करते चलेगा।
- 9 तब तू पुकारेगा और यहोवा उत्तर देगा; तू दोहाई देगा और वह कहेगा, मैं यहां हूं। यदि तू अन्धेर करना और उंगली मटकाना, और, दुष्ट बातें बोलना छोड़ दे,
- 10 उदारता से भूखे की सहायता करे और दीन दुःखियों को सन्तुष्ट करे, तब अन्धियारे में तेरा प्रकाश चमकेगा, और तेरा घोर अन्धकार दोपहर का सा उजियाला हो जाएगा।
- 11 और यहोवा तुझे लगातार लिए चलेगा, और काल के समय तुझे तृप्त और तेरी हड्डियों को हरी भरी करेगा; और तू सींची हुई बारी और ऐसे सोते के समान होगा जिसका जल कभी नहीं सूखता।

9. 1 थिस्सलुनीकियों 5 : 23

- 23 शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 120 : 4-6

आत्मा या आत्मा, ईश्वर, अपरिवर्तनीय और शाश्वत है; और मनुष्य आत्मा, ईश्वर के साथ सह-अस्तित्व रखता है, क्योंकि मनुष्य ईश्वर की छवि है।

2. 477 : 22-2

आत्मा ही मनुष्य का पदार्थ, जीवन और बुद्धिमत्ता है, जो व्यक्तिगत है, लेकिन पदार्थ में नहीं। आत्मा कभी भी किसी भी चीज को हीन नहीं कर सकती।

मनुष्य आत्मा की अभिव्यक्ति है। भारतीयों ने अंतर्निहित वास्तविकता की कुछ झलकियाँ पकड़ीं, जब उन्होंने एक निश्चित सुंदर झील को "द ग्रेट स्पिरिट की मुस्कान" कहा। मनुष्य से अलग, जो आत्मा को व्यक्त करता है, आत्मा एक अस्तित्वहीन होगा; मनुष्य, आत्मा से तलाकशुदा, अपना अस्तित्व खो देगा। लेकिन ऐसा कोई विभाजन नहीं है, हो भी नहीं सकता, क्योंकि मनुष्य ईश्वर के साथ सह-अस्तित्व में है।

3. 307 : 25 (जो)-30

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

दिव्य मन मनुष्य की आत्मा है, और यह मनुष्य को सभी चीजों पर प्रभुत्व प्रदान करता है। मनुष्य को भौतिक आधार से नहीं बनाया गया था, न ही उन भौतिक कानूनों का पालन करने पर प्रतिबंध लगाया गया है जो आत्मा ने कभी नहीं बनाए; उनका प्रांत मन की उच्च विधि में आध्यात्मिक विधियों में है।

4. 140 : 8-13, 16-18

जब हम ईश्वरीय प्रकृति को समझ लेते हैं और उसी रूप से प्रेम करते हैं, तो हम उस अनुपात को स्वीकार करेंगे और उसका पालन करेंगे, जो कि नगरपालिका से अधिक नहीं, बल्कि हमारे ईश्वर के सान्निध्य में आनन्दित होगा। तब धर्म हृदय का होगा, मस्तिष्क का नहीं।

हम आध्यात्मिक रूप से पूजा करते हैं, केवल इसलिए कि हम भौतिक रूप से पूजा करते हैं। आध्यात्मिक भक्ति ईसाई धर्म की आत्मा है।

5. 451 : 2-4, 8-18

ईसाई वैज्ञानिकों को भौतिक दुनिया से बाहर आने और अलग होने के लिए धर्मत्यागी आदेश के निरंतर दबाव में रहना चाहिए।

क्रिश्चियन साइंस के छात्र, जो अपने पत्र के साथ शुरू करते हैं और आत्मा के बिना सफल होने के लिए सोचते हैं, या तो अपने विश्वास का जहाज़ बना लेंगे या दुखी हो जाएंगे। उन्हें न केवल जीवन के संकीर्ण मार्ग में प्रवेश करने की खोज करनी चाहिए, बल्कि प्रयास भी करना चाहिए, क्योंकि "चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं।" मनुष्य उस दिशा में चलता है जिस ओर वह देखता है, और जहां उसका खजाना है, वहां उसका दिल भी होगा। यदि हमारी आशाएँ और स्नेह आध्यात्मिक हैं, तो वे ऊपर से आते हैं, नीचे से नहीं, और अतीत की तरह वे आत्मा के फल का उत्पादन करते हैं।

6. 222 : 31-6

हमें इस गलत धारणा को नष्ट करना होगा कि जीवन और बुद्धि पदार्थ में हैं, तथा हमें स्वयं को शुद्ध और परिपूर्ण चीजों में स्थापित करना होगा। पाल ने कहा, "आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।" जल्दी या बाद में हमें पता चलेगा कि मनुष्य की परिमित क्षमता के भ्रूण को इस भ्रम से मजबूर किया जाता है कि वह आत्मा के बजाय आत्मा के स्थान पर शरीर में रहता है।

7. 60 : 29-6

आत्मा के पास आत्मा को प्राप्त करने के लिए अनंत संसाधन हैं, और खुशी अधिक आसानी से प्राप्त की जाएगी और हमारे रखने में अधिक सुरक्षित होगी, अगर आत्मा में मांग की जाए। अकेले उच्च आनंद अमर आदमी के लालसा को संतुष्ट कर सकते हैं। हम व्यक्तिगत समझदारी की सीमा के भीतर खुशी का संचार नहीं कर सकते। इंद्रियां वास्तविक आनंद नहीं देती हैं।

मानव के हित में अच्छाई बुराई पर अध्यात्म और पशु पर आधिपत्य होना चाहिए, या सुख कभी नहीं जीता जाएगा।

8. 273 : 16-20

सामग्री और चिकित्सा विज्ञान के तथाकथित कानूनों ने नश्वर को कभी भी पूर्ण, सामंजस्यपूर्ण और अमर नहीं बनाया है। आत्मा द्वारा शासित होने पर मनुष्य सामंजस्यपूर्ण होता है। इसलिए होने के सत्य को समझने का महत्व, जो आध्यात्मिक अस्तित्व के नियमों को प्रकट करता है।

9. 210 : 11-16

यह जानकर कि आत्मा और उसकी विशेषताओं को हमेशा मनुष्य के माध्यम से प्रकट किया गया था, मास्टर ने बीमारों को चंगा किया, अंधे को दृष्टि दी, बधिर को सुना, पैरों को लंगड़ा किया, इस प्रकार दिव्य की वैज्ञानिक कार्यवाही को प्रकाश में लाया मानव मन और शरीर पर मन और आत्मा और मोक्ष की बेहतर समझ देना।

10. 232 : 19-25

यीशु ने कभी नहीं सिखाया कि ड्रग्स, भोजन, हवा और व्यायाम एक आदमी को स्वस्थ बना सकते हैं, या कि वे मानव जीवन को नष्ट कर सकते हैं; न ही उसने अपने अभ्यास से इन त्रुटियों का वर्णन किया। उन्होंने मन के प्रति सद्भाव का उल्लेख किया, सामग्री के लिए नहीं, और कभी भी ईश्वर के वाक्य को प्रभावित करने की कोशिश नहीं की, जिसने पाप, बीमारी और मृत्यु की ईश्वर की निंदा को सील कर दिया।

11. 196 : 11-18

"उससे डरें जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नष्ट करने में सक्षम हैं," यीशु ने कहा। इस पाठ का सावधानीपूर्वक अध्ययन से पता चलता है कि यहाँ आत्मा शब्द का अर्थ गलत अर्थ या भौतिक चेतना है। यह आदेश रोम के, शैतान का नहीं, ईश्वर का नहीं, बल्कि पाप से सावधान रहने की चेतावनी थी। बीमारी, पाप और मृत्यु जीवन या सत्य के सहवर्ती नहीं हैं। कोई कानून उनका समर्थन नहीं करता। उनकी सत्ता स्थापित करने के लिए ईश्वर के साथ उनका कोई संबंध नहीं है।

12. 427 : 2-12

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

जीवन आत्मा का नियम है, यहां तक कि सत्य की आत्मा का कानून, और आत्मा कभी भी अपने प्रतिनिधि के बिना नहीं है। मनुष्य की आत्मा न तो मर सकती है और न ही बेहोशी में गायब हो सकती है, क्योंकि आत्मा अमर है। यदि मनुष्य अभी मृत्यु में विश्वास करता है, तो उसे यह जानकर अविश्वास करना चाहिए कि मृत्यु में कोई वास्तविकता नहीं है, क्योंकि होने का सत्य अमर है। यह विश्वास कि अस्तित्व अस्तित्व में है, जीवन को समझने और सामंजस्य प्राप्त करने से पहले विज्ञान से मिलना और उसमें महारत हासिल करना चाहिए।

13. 119 : 29 (ईसाई)-3

ईसाई विज्ञान आत्मा और शरीर के प्रतीत होने वाले संबंध को उलट देता है और शरीर को मन की सहायक बनाता है। इस प्रकार यह मनुष्य के साथ है, जो संयमशील मन का विनम्र सेवक है, हालांकि यह समझदारी को अन्यथा प्रकट करता है। लेकिन हम इसे कभी नहीं समझेंगे जबकि हम स्वीकार करते हैं कि आत्मा शरीर या मन में है, और वह आदमी गैर-बुद्धि में शामिल है।

14. 9 : 17-24

क्या आप "अपने भगवान को अपने प्रभु और अपने सभी प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखते हैं"? इस आदेश में बहुत कुछ शामिल है, यहां तक कि सभी भौतिक संवेदना, स्नेह और पूजा का समर्पण भी। यह ईसाई धर्म का एल डोराडो है। इसमें जीवन का विज्ञान शामिल है, और केवल आत्मा के दिव्य नियंत्रण को मान्यता देता है, जिसमें आत्मा हमारा स्वामी है, और भौतिक अर्थ और मानव का कोई स्थान नहीं होगा।

15. 125 : 12-16

जैसे-जैसे मानव विचार एक अवस्था से दूसरे चरण में बदलता है, दर्द और दर्द रहितता, दुःख और आनन्द, - भय से आशा और विश्वास से समझ तक, - दृश्य अभिव्यक्ति अंतिम रूप से मनुष्य द्वारा शासित होगी, भौतिक अर्थ से नहीं।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6